काव्य स्मृति

पाठ्य-पुस्तक

बी.एससी /एम.बी.एस/एम.एससी (बयालोजिकल साईन्स) बी.एस(4)/बी.ओ.सी,/बी.एससी(आनर्स)

(B.Sc/B.V.Sc/M.Sc(Biological Sciences)/B.S.(4) BOC/B.Sc (Hon) -Language under AECC for the year 2021-22 onwards)

द्वितीय सेमिस्टर/ II SEMESTAR

संपादक

डॉ. शेखर

डॉ. प्रभु उपासे

डॉ. शर्मिला बिश्वास

प्रकाशक

प्रसारांग

बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरू – 560001

KAVYA SMRITI

Edited by:
Dr. Shekhar
Dr. Prabhu Upase
Dr. Sharmila Biswas

@बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय
प्रथम संस्करण – 2021

Pages:

प्रधान संपादक
डॉ. शेखर

मूल्य :-

प्रकाशक
प्रसारांग
बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरू – 560001

भूमिका

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय में 2021-22 शैक्षिक वर्ष से एन.ई.पी-2020 नियम (पद्धति) के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए नया पाठ्यक्रम जारी किया जा रहा हैं।

इस पाठ्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात् हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण और सराहना कैसे किया जाए और दिये गये पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए, ताकि विद्यार्थी भाषा और साहित्य के उद्देश्य से भली-भाँति परिचित हो सके। जैसे विज्ञान और आदि विषयों के अध्ययन के साथ यह भी अधिक उपयोगी हैं। एन.ई.पी सेमिस्टर पद्धति के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया हैं।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी अध्ययन-मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर जी के मार्गदर्शन में पाठ्य-पुस्तक का निर्माण किया है।

विश्वास है कि यह काव्य संकलन छात्र समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय की यह शुभेच्छा है कि साहित्य और समाजशास्त्रीय विषयों के लिए भी अधिक उपयोगी और प्रासंगिक लगे। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देनेवाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

डॉ. लिंगराज गांधी
कुलपति
बेंगलूर नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

प्रधान संपादक की कलम से......

बेंगलूरू नगर विश्वविध्यालय शैक्षिक क्षेत्र में नये-नये विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अनुसार प्रस्तुति करने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थिति के अनुसार रखने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एन.ई.पी सेमिस्टर पध्दति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले सम्पादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इस नयी पाठ्य पुस्तक के निर्माण में कुलपति महोदय डॉ. लिंगराज गांधी जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, तदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस पाठ्यक्रम को नयी शिक्षा नीति के ध्येयोद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। काव्य के विविध आयामों को इस पाठ्य पुस्तक में शामिल किये गए हैं। आशा है कि सभी विद्यार्थीगण इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष (बी.ओ.एस)
बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	कविता	कवि	पृ. सं
I.	भूमिका		03
II.	प्रधान संपादक की कलम से..		04
1.	साखी	- कबीरदास	06-07
2.	पद	- मीराबाई	08-09
3.	दोहे	- रहीम	10-12
4.	पाषाणी	-नागार्जुन	13-16
5.	नर हो, न निराश करो मन को	-मैथिलीशरण गुप्त	17-19
6.	आह: यह धरती कितना देती है	-सुमित्रानंदन पंत	20-23
7.	तोड़ती पत्थर	-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	24-25
8.	बेजगह	- अनामिका	26-28
9.	झाँसी की रानी	- सुभद्राकुमारी चौहान	29-31
10.	हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हाँ,	- भवानी प्रसाद मिश्र	32-38
11.	कवि परिचय		38-52

1. कबीर की साखी

-कबीर दास

सतगुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनंत दिखावण हार।।1।।

जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहिं राम।
ते नर इस संसार में, उपजि भये बेकाम।।2।।

रात्यूँ रूँनी विरहनीं, ज्यूँ बंचौ कूँ कुंज।
कबीर अंतर प्रजल्या, प्रगटया बिरहा पुंज।।3।।

चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूँ, ते दिन मिले न राति।।4।।

कर कमाण सर साँधि करि, खैचि जु मारया माँहि।
जु भीतरि भिद्या सुमार है, जीवै कि जीवै नाँहि।।5।।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
अपना मन सीतल करै, औरन को सुख होय।।6।।

माला फेरत जग मुआ, मिटा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।7।।

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान|
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्राण।।8।।

सर्गुन की सेवा करौ, निर्गुन का करू ग्यान।
निर्गुन सर्गुन के परे, तहैं हमारा ध्यान||9||

तेरा साँई तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर फिर ढूँढै घास।।10।।

छीर रूप सतनाम है, नीर रूप व्यवहार।
हंस रूप कोई साध है, तत का छाननहार।।11।।

*****

कठिन शब्दार्थ :-

लोचन-आँख, दिखावणहार-सत्य का दर्शन, उघाड़ियाँ-खोलना, घटी-ह्रदय, रसना-जिव्हा, उपजी-उत्पन्न, रात्युं-रात में, रोन्यां-रोना, प्रगटया-प्रकाशित, रैणि-रात्रि, बिछुटे-बिछड़ना, परभाती-सुबह, कर-हाथ, माँहि-अंदर, सुमार-गहरा घाव, बाणी-वाणी, आपा-गुस्सा, खोय-खोना, फेरत-फेरना, मनाका-मोती, डार दे-छोड़ दे, घट-घड़ा, मसान-स्मशान, खाल-चमड़ी, सर्गुन-गुणयुक्त, निर्गुण-दोषयुक्त, परे-दूर, पुहुपन-पुष्प, बास-खुशबू,रहना, मिरग-मृग, वीर-दूध, नीर-पानी, छाननहार-छानने वाला, अलग करनेवाला

2. मीराबाई के पद

-मीराबाई

राणा जी! अब न रहूँगी तोरी हटकी| टेक।
साथ संग मोहि प्यारा लागे, लाज गई घूँघट की।
पीहर मेड़ता छोड़ा आपण सुरत निरत दोऊ चटकी।
सतगुर मुकुर दिखाया घट का नाचूँगी दे दे चुटकी
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूडा कर की पटकी।
मेरा सुहाग अब मोकूँ दरसा, और व जाने घट की।
महल किला राणा मोहि न चाहिए सारी रेशम पट की।
हुई दिवानी मीरा डोलै केस लटा सब छिटकी ।।

थे म्हारे घर आवह जी प्रीतम प्यारा। टेक ।
चुन चुन कलियों में सेज बनाऊँ, भोजन करूँ मैं सारा।
तुम सगुणों में अवगुणधारी, तुम छो बगसणहारा।
मीरों के प्रभु गिरधरनागर तुम बिनि नैण दुखियारा।।

माई म्हाँ गोबिन्द गुण गाणा ।टेक।
राजा रूठयाँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठयाँ कहूँ जाणा।
राणौ भेज्या विषरो प्याला चरणामृत पी जाणा ।
काला नाग पिटार्यों भेज्यों सालगराम पिछाणा।
मीराँ सो अब प्रेंम दिवाणी, साँवलिया वर पाणा।।

जोगी मत जा मत जा मत जापांइ परुँ मैं तेरी चेरी हौं। टेक।
प्रेम भगति को पैड़ो हौ न्यारा, हमक गैल बता जा
अगर चंदण को चिता बणाऊँ, अपणों हाथ जला जा
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणों अंग लगा जा
मीरा कहै प्रभु गिरधरनागर, जोत में जोत मिला जा।।

*****

कठिन शब्दार्थ :-

1. हटकी-रोकी हुई, साद्य-साधु, सुरत निरत-स्मरण और नृत्य, सन्त मत की प्रमुख साधना के दो अंग। मुकुर-शीशा, घट-आत्मा, हृदय, पट-कपड़ा।

2.ये-तुम, करूँ-तैयार करूँ, सगुणों-गुणवान, अवगुण धारी-दोषों से भरपूर, बगसणहारा-क्षमा करने वाला।

3 गाणा- गाऊँगी, रूठ्यों- रूठने पर, राणे-राणा, सालगराम- शालग्राम, पिछाणा-जान लिया, वर-पति।

4 चेरी-दासी, पैड़ो-मार्ग, गैल-रास्ता, जोत-ज्योति ।

3. दोहे

-रहीम

अंड न बौड़ रहीम कहि, देखि सचिक्कन पान।
हस्ती–ढक्का कुल्हाड़िन, सहैं ते तरूवर आन।।1।।

ऊगत जाही किरन सों, अथवत ताहि कांति ।
त्यौं रहीम सुख दुख सबै, बढ़त एक ही भांति।।2।।

आप न काहू काम के, डार पात फल मूल ।
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल।।3।।

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह ।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छांड़त छोह।।4।।

टूंटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि - फिरि पोहिये, टूटे मुक्ता हार।।5।।

रहिमन खोजे ऊख में, जहाँ रसन की खानि ।
जहां गांठ तहं रस नहीं, यही प्रीति में हानि।।6।।

रहिमन विद्या बुद्धि नहिं, नहीं धरम जस दान।
भू पर जनम वृथा धरै, पसु बिनु पुंछ विषान।।7।।

समय-लाभ सम लाभ नहिं, समय-चूक सम चूक ।
चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक।।8।।

होय न जाकी छांह ढिग, फल रहीम अति दूर।
बढ़िहू सो बिनु काज ही, जैसे तार खजूर ।।9।।

रहिमन जग की रीति, मैं देख्यो रस ऊख में।
ताहू में परतीति, जहां गांठ तह रस नहीं।।10।।

*****

शब्दार्थ:

1. अंड-अरंड का वृक्ष बहुत ही दुर्बल होता है। बौड़-घमंड करना; सचिक्कन-चिमने, पान-पत्ते, हस्ती ढक्का -हाथी का धक्का ।
2. ऊगत - उदित होता है, जाही-जिस, अयक्त-अस्त होता है, कांति-शोभा।
3. डार-डाल, शाखा; मूल-जड़, बबूल - एक वृक्ष जिसमें सिर्फ कांटे होते है।
4. जात बहि- बहकर निकल जाता है। मीनन को-मछलियों को, तऊ-तब भी, छोह-प्रेम ।

5. टूटे-रूठे हुए, सुजन-सज्जन, फिरि- फिरि – बार बार, पोहिये- पिरे लेना, मुक्ता हार-मोतियों का हार।
6. ऊख - ईख, खानि-भण्डार, गांठ – गांठ, मनोमालिन्य; रस-रस, आनन्द।
7. जस - धरा, भू - पृथ्वी, बिषान- बिषाण, सींग।
8. समय लाभ-समय का सदुपयोग करने से प्राप्त लाभ, सम-समान, समय चूक- समय को व्यर्थ गवाने की गलती, हूक-गहरी वेदना ।
9. ढिग- समीप, बढ़िइ-बढ़ते हैं। बिनु काज ही- बिना काम ही, अर्थात् व्यर्थ ही, तार-ताड़।
10. रीति-व्यवहार, रस ऊख में-रस वाले गन्ने में, परतीति- विश्वास ।

*****

4. पाषाणी

- नागार्जुन

आंगन से हटकर कुछ थोड़ी दूर
एक झोंपड़ी थी उत्तर की ओर
वहाँ पहुँचकर देखा अद्भुत दृश्य -
भू-लुंठित थी नारी-प्रतिमा, ओह!
ग्लानि-क्षोभ का वैसा करुण प्रतीक ।
देख सामने राम रह गए दंग,
मुँह से फूटा नहीं एक भी बोल,
वहीं धम्म से बैठ गए तत्काल...
हुए हतप्रभ और व्यथित सौमित्र।
निर्निमेष थे उनके दोनों नेत्र,
पाषाणी का मुखमंडल था केंद्र
इस प्रकार अवलोकन में
कुछ काल बीता।
तब कौशल्यानंदन और पास
आ गए, किया मूर्ति का स्पर्श।
खुली पलक, टिमटिमा उठी फिर दृष्टि,
हुए दीप्त सहसा गहरे दृग-कूप,
अधरों पर था स्पंदन का आभास,
पुनः कराया कर पल्लव-संस्पर्श,
फिर चमकी आँखे, फिर फड़के ओंठ ;

पाषाणी में किया प्राण-संचार -
"कौन देव, तुम मेरे हृदयाधार ?
सुनती हूँ करता अमरत्व-प्रदान
धनश्याम, बतालाओ, तुम हो कौन ?
पाषाणी में डाल दिए हैं प्राण।"
कहा राम ने होकर परम विनीत -
"कोसलेश दशरथ के हम हैं पुत्र,
राम-लखन-से साधारण हैं नाम,
किया राक्षसों ने भीषण उत्पात,
पूर्णाहुति तक पहुँच न पाये यज्ञ -
उन दुष्टों का ही करने संहार
महाराज से हमको लाये माँग
गाधीपुत्र, कौशिकमुनि, विश्वामित्र ;
उन्हीं महाकुल-पति का ले आदेश
निकले हैं अब देश-भ्रमण के हेतु,
देवि, हमारा दसवाँ दिन है आज
इस कुटिया में । हुई आप प्रकृतिस्थ
अहो भाग्य । मैं किन्तु पूछ लूँ नाम,
गोत्र और कुल...कैसा यह अभिशाप?
'गौतमदार अहल्या मेरा नाम
यहीं कहीं होंगे मुनि भी हे राम!
दिया उन्होंने मुझको यह अभिशाप -

'पर नर दूषित, पुंश्चलि, तेरी देह,
हो जाए निस्पंद कुलिश-पाषाण।'
किंतु वत्स, तेरे सिर पर रखं हाथ
सत्य-सत्य कहती हूँ परमोदार ।
साक्षी पृथ्वी, साक्षी है आकाश,
हुई नहीं संपृक्त किसी के साथ
कभी अहल्या अपने पति को छोड़ ।
धरकर पति का आकृति-रूप-स्वभाव
यदि आये कोई पत्नी के पास -
कहो तात, फिर इसमें किसका दोष ? -
फिर भी किया नहीं मैंने प्रतिवाद
रोष गरल की भांति हो गया व्याप्त ;
प्रबल ताप से लहू बन गया बर्फ,
ऐंठी जिव्हा, वाक्य हो गये बंद -
चेष्टाएँ भी रह न सकीं अनिरूद्ध,
धरशायिनी बनी, वत्स मैं, हन्त ! -
भग्नदीपिका, सुखी बाती और
चिर अवहेलित कुटिया निर्जन प्रान्त -
स्नेहदान का यह अद्‌भुत वृतान्त
सुन-सुन पुलकित होगा सारा विश्व ।
जय-जय कौशल्यानंदन राम।
पाषाणी करती है तुम्हें प्रणाम।"

लिए अहल्या ने दोनों कर जोड़
उठ न सकी, इतनी दुर्बल थी, किन्तु
लगा प्रवाहित होने अश्रु-प्रवाह।
"नहीं हुई थी अम्ब, आप पाषाण,
नहीं हुई थी अम्ब, आप निष्प्राण।
नहीं-नहीं अंतस्सलिला मरुभूमि -
सदृश आप भी रहीं चेतना-पूर्ण।
उसी समय हो गया मुझे विश्वास -
प्रतिमा है यह नहीं इतर-सामान्य ;
अब निश्चित है पति का अनुचित शाप
अम्ब, आपमें हो न सका संक्रान्त।
कैसे छुए किसी को कोई शाप
किया नहीं जब सपने में भी पाप?"
*****

5. नर हो, न निराश करो मन को

- मैथिलीशरण गुप्त

कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को।।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोंत्तर गुंजित गान रहे
सब जाय अभी पर मान रहे
कुछ हो न तज़ो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

प्रभु ने तुमको दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

किस गौरव के तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जान हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो
बनता बस उद्‌यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो।।

*****

6. आह: यह धरती कितना देती है।

-सुमित्रानंदन पंत

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल फलकर मै मोटा सेठ बनूँगा!
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी नें न एक भी पैसा उगला!-
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गये!
मैं हताश हो बाट जोहता रहा दिनों तक
बाल-कल्पना के अपलर पाँवडडे बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था!

अर्द्धशती हहराती निकल गयी है तबसे!
कितने ही मधु पतझर बीत गये अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूली, शरदें मुसकाई;
सी-सी कर हेमन्त कँपे, तरु झरे, खिले वन!
औ\' जब फिर से गाढ़ी, ऊदी लालसा लिये
गहरे, कजरारे बादल बरसे धरती पर,
मैंने कौतूहल-वश आँगन के कोने की
गीली तह यों ही उँगली से सहलाकर

बीज सेम के दबा दिये मिट्टी के नीचे-
भू के अंचल में मणि-माणिक बाँध दिये हो!
मैं फिर भूल गया इस छोटी-सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन!
किन्तु, एक दिन जब मैं सन्ध्या को आँगन में
टहल रहा था,- तब सहसा, मैने देखा
उसे हर्ष-विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से!

देखा-आँगन के कोने में कई नवागत
छोटे-छोटे छाता ताने खड़े हुए हैं!
छांता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं प्यारी-
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे-
डिम्ब तोड़कर निकले चिडियों के बच्चों से!
निर्निमेष, क्षण भर, मैं उनको रहा देखता-
सहसा मुझे स्मरण हो आया,-कुछ दिन पहिले
बीज सेम के मैने रोपे थे आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधो की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हें नाटे पैर पटक, बढती जाती है!
तब से उनको रहा देखता धीरे-धीरे
अनगिनती पत्तों से लद, भर गयी झाड़ियाँ,
हरे-भरे टंग गये कई मखमली चँदोवे!

बेलें फैल गयी बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को,-
मैं अवाक् रह गया-वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे तारों-से छितरे, फूलों के छीटे
झागों-से लिपटे लहरों श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से,
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से!

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ फूटी!
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,-
पतली चौड़ी फलियाँ! उफ उनकी क्या गिनती!
लम्बी-लम्बी अँगुलियों - सी नन्हीं-नन्हीं
तलवारों-सी पन्ने के प्यारे हारों-सी,
झूठ न समझे चन्द्र कलाओं-सी नित बढ़ती,
सच्चे मोती की लड़ियों-सी, ढेर-ढेर खिल
झुण्ड-झुण्ड झिलमिलकर कचपचिया तारों-सी!
आः इतनी फलियाँ टूटी, जाड़ो भर खाई,
सुबह शाम वे घर-घर पकीं, पड़ोस पास के
जाने-अनजाने सब लोगों में बँटबाई
बंधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतों ने
जी भर-भर दिन-रात महुल्ले भर ने खाई !-
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ!

यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नही समझ पाया था मैं उसके महत्व को,-
बचपन में छिः स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर!
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने है;
इसमें जन की क्षमता का दाने बोने है,
इसमें मानव-ममता के दाने बोने है,-
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, - जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ-
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

*****

7. तोड़ती पत्थर

-सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
"मैं तोड़ती पत्थर।"

*****

8. बेजगह

-अनामिका

“अपनी जगह से गिर कर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाख़ून”—
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थीं
हम लड़कियाँ अपनी जगह पर।

जगह? जगह क्या होती है?
यह वैसे जान लिया था हमने
अपनी पहली कक्षा में ही।
याद था हमें एक-एक क्षण
आरंभिक पाठों का—
राम, पाठशाला जा!
राधा, खाना पका!
राम, आ बताशा खा!
राधा, झाड़ू लगा!
भैया अब सोएगा
जाकर बिस्तर बिछा!
अहा, नया घर है!
राम, देख यह तेरा कमरा है!

‘और मेरा?’
‘ओ पगली,
लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता।

जिनका कोई घर नहीं होता—
उनकी होती है भला कौन-सी जगह?
कौन-सी जगह होती है ऐसी
जो छूट जाने पर औरत हो जाती है।
कटे हुए नाख़ूनों,
कंघी में फँस कर बाहर आए केशों-सी
एकदम से बुहार दी जाने वाली?

घर छूटे, दर छूटे, छूट गए लोग-बाग
कुछ प्रश्न पीछे पड़े थे, वे भी छूटे!
छूटती गई जगहें
लेकिन, कभी भी तो नेलकटर या कंघियों में
फँसे पड़े होने का एहसास नहीं हुआ!

परंपरा से छूट कर बस यह लगता है—
किसी बड़े क्लासिक से
पास कोर्स बी.ए. के प्रश्नपत्र पर छिटकी
छोटी-सी पंक्ति हूँ—

चाहती नहीं लेकिन
कोई करने बैठे
मेरी व्याख्या सप्रसंग।
सारे संदर्भों के पार
मुश्किल से उड़ कर पहुँची हूँ
ऐसी ही समझी-पढ़ी जाऊँ
जैसे तुकाराम का कोई
अधूरा अंभग!

*****

9. हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ।

- भवानीप्रसाद मिश्र

जी हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ!

जी, माल देखिये दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने,
यह गीत सख़्त सर-दर्द भुलाएगा,
यह गीत पिया को पास बुलाएगा!
जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको,
पर बाद-बाद में अक़्ल जगी मुझको,
जी, लोगों ने तो बेच दिये ईमान,
जी, आप न हों सुनकर ज़्यादा हैरान-
मैं सोच-समझकर आख़िर,
अपने गीत बेचता हूँ,
जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ!

यह गीत सुबह का है, गाकर देखें,
यह गीत ग़ज़ब का है, ढाकर देखें,
यह गीत ज़रा सूने में लिक्खा था,

यह गीत वहां पूने में लिक्खा था,
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,
यह गीत बढ़ाए से बढ़ जाता है !
यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
जी, यह मसान में भूख जगाता है,
यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर,
यह गीत तपेदिक की है दवा हुजूर,
जी, और गीत भी हैं दिखलाता हूँ,
जी, सुनना चाहें आप तो गाता हूँ।
जी, छन्द और बेछन्द पसंद करें,
जी अमर गीत और वे जो तुरत मरें!
ना, बुरा मानने की इसमें क्या बात,
मैं ले आता हूँ क़लम और दावात,
इनमें से भाए नहीं, नए लिख दूँ,
मैं नए पुराने सभी तरह के गीत बेचता हूँ
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ!

जी, छन्द और बेछन्द पसंद करें,
जी अमर गीत और वे जो तुरत मरें!
ना, बुरा मानने की इसमें क्या बात,
मैं ले आता हूँ क़लम और दावात,
इनमें से भाए नहीं, नए लिख दूँ,

मैं नए पुराने सभी तरह के गीत बेचता हूँ
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ!

जी, गीत जनम का लिखूँ, मरण का लिखूँ
जी, गीत जीत का लिखूँ, शरण का लिखूँ,
यह गीत रेशमी है, यह खादी का,
यह गीत पित्त का है, यह बादी का!
कुछ और डिजाइन भी हैं, यह इल्मी
यह लीजे चलती चीज़, नई फ़िल्मी,
यह सोच-सोचकर मर जाने का गीत,
मैं लिखता ही तो रहता हूँ दिन-रात,
तो तरह-तरह के बन जाते हैं गीत!
जी, बहुत ढेर लग गया, हटाता हूँ,
ग्राहक की मर्जी, अच्छा जाता हूँ,
या भीतर जाकर पूछ आइये आप,
है गीत बेचना वैसे बिलकुल पाप,
क्या करूँ मगर लाचार
हारकर गीत बेचता हूँ!
जी हाँ, हुज़ूर मैं गीत बेचता हूँ।

*****

10. झाँसी की रानी

- सुभद्रा कुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तनी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठनी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, यह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

कानपुर के नाना की मुह बोली बहन छब्बिली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह नाना के सँग खेली थी
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी, उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथाएँ उसकी याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना यह थे उसके प्रिय खिलवाड़।

महाराष्ट्रा-कुल-देवी उसकी भी आराध्या भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ बन आई रानी लक्ष्मी बाई झाँसी में,
राजमहल में बाजी बधाई खुशियाँ छायी झाँसी में,
सुघत बुंडेलों की विरूदावली-सी वह आई झाँसी में।
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

उदित हुआ सौभाग्या, मुदित महलों में उजियली च्छाई,
किंतु कालगती चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई है, विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मारे राजाजी, रानी शोक-सामानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

बुझा दीप झाँसी का तब डॅल्लूसियी मान में हरसाया,
ऱाज्य हड़प करने का यह उसने अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौज भेज दुर्ग पर अपना झंडा फेहराया,

लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज झाँसी आया।
अश्रुपुर्णा रानी ने देखा झाँसी हुई वीरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की मैया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब वा भारत आया,
डल्हौसि ने पैर पसारे, अब तो पलट गयी काया
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

छीनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
क़ैद पेशवा था बिठुर में, हुआ नागपुर का भी घाट,
ऊदैपुर, तंजोर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात?
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात।
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

रानी रोई रनवासों में, बेगम गुम सी थी बेज़ार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,

सरे आम नीलाम छपते थे अँग्रेज़ों के अख़बार,
"नागपुर के ज़ेवर ले लो, लखनऊ के लो नौलख हार"।
यों पर्दे की इज़्ज़त परदेसी के हाथ बीकानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मान में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धूंधूपंत पेशवा जूटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञा प्रारंभ उन्हे तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिंगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर, में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में काई वीरवर आए काम,
नाना धूंधूपंत, तांतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवर सिंह, सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो क़ुर्बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दनों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बड़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्ध आसमानों में।
ज़ख़्मी होकर वॉकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अँग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अँग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

विजय मिली, पर अँग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुंहकी खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
यूद्ध क्षेत्र में ऊन दोनो ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये अवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी, उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

रानी गयी सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता-नारी थी,
दिखा गयी पथ, सीखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जागावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

*****

कवि परिचय

1. कबीरदास:

सन्त (ज्ञानाश्रयी निर्गुण) काव्यधारा के प्रवर्तक कबीरदास का जन्म संवत् 1456 (सन् 1399) की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार को हुआ था। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है-

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रगट भए ॥

बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि कवियों ने इसी संवत् को स्वीकार किया हैं। एक जनश्रुति के अनुसार इनका जन्म हिन्दू परिवार में हुआ था। कहते हैं कि ये एक विधवा ब्राह्मणी के पुत्र थे, जिसने इन्हें लोक-लाज के भय से काशी के लहरतारा नामक तालाब के किनारे स्थान पर छोड़ दिया था, जहाँ से नीरू-नीमा नामक एक जुलाहा दंपति नि:सन्तान होने के कारण इन्हें उठा ला कर पाला पोसा।

कबीर के जन्म-स्थान के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद हैं, परन्तु अधिकतर विद्वान् इनका जन्म काशी में ही मानते हैं, जिसकी पुष्टि स्वयं कबीर की यह कथन भी करता है –

काशी में परगट भये, हैं रामानन्द चेताये।

इससे इनके गुरु का नाम भी पता चलता है कि प्रसिद्ध वैष्णव सन्त आचार्य रामानन्द से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की।

गुरुमन्त्र के रूप में इन्हें 'राम' नाम मिला, जो इनकी समग्र भावी साधना का आधार बना।

कबीर की पत्नी का नाम लोई था, जिससे इनके कमाल नामक पुत्र और कमाली नामक पुत्री उत्पन्न हुई। कबीर बड़े निर्भीक और मस्तमौला स्वभाव के थे। व्यापक देशाटन एवं अनेक साधु-सन्तों के सम्पर्क में आते रहने के कारण इन्हें विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों का ज्ञान प्राप्त हो गया था। ये बड़े सारग्राही एवं प्रतिभाशाली थे। कबीर की दृढ़ मान्यता थी कि मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है, स्थान-विशेष के प्रभाव से नहीं। अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए अन्त समय में ये मगहर चले गये; क्योंकि लोगों की मान्यता थी कि काशी में मरने वाले को मुक्ति मिलती है, किन्तु मगहर में मरने वाले को नरक। अधिकतर विद्वानों ने माना है कि कबीर की मृत्यु संवत् 1575 (सन् 1519) में हुई। इसके समर्थन में अग्रलिखित उक्ति प्रसिद्ध है-

संवत् पंद्रह सौ पछत्तरा, कियो मगहर को गौन।
माघे सुदी एकादशी, रलौ पौन में पौन ॥

कृतियाँ- कबीर लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। यह बात उन्होंने स्वयं कही है मसि कागद छूयो नहीं, कलम गयो नहिं हाथ।

उनके शिष्यों ने उनकी वाणियों का संग्रह 'बीजक' नाम से किया, जिसके तीन मुख्य भाग हैं – साखी, सबद

(पद), रमैनी। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'बीजक' का सर्वाधिक प्रामाणिक अंश 'साखी' है। इसके बाद सबद और अन्त में 'रमैनी' का स्थान है।

साखी संस्कृत के 'साक्षी' शब्द का विकृत रूप है और 'धर्मोपदेश' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अधिकांश साखियाँ दोहों में लिखी गयी हैं, पर उनमें सोरठे का प्रयोग भी मिलता है। कबीर की शिक्षाओं और सिद्धान्तों का निरूपण अधिकतर 'साखी' में हुआ है। सबद गेय-पद हैं, जिनमें संगीतात्मकता पूरी तरह विद्यमान है। इनमें उपदेशात्मकता के स्थान पर भावावेश की प्रधानता है; क्योंकि इनमें कबीर के प्रेम और अन्तरंग साधना की अभिव्यक्ति हुई है। रमैनी चौपाई छन्द में रची गयी है। इनमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचारों को प्रकट किया गया है।

*****

2. नागार्जुन

नागार्जुन का जन्म सन् 1911 में बिहार के दरभंगा जिले के तरौनी ग्राम में हुआ था। नागार्जुन के पिता का नाम 'गोकुल मिश्र' तथा माता का नाम 'उमा देवी' था। काशी और कलकत्ता में उन्होंने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया।

कवि नागार्जुन भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं। नागार्जुन प्रगतिवादी युग के कवि हैं। नागार्जुन जी को

शुरु से ही संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, पाली, आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था । उन्होंने अपनी महान विचारधारा को बेहद सहजता और सरलता से अपनी रचनाओं में प्रकट किया है।

प्रसिद्ध रचनाएँ: कविता-संग्रह - युगधारा, भस्मांकुर, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली इत्यादि ।

उपन्यास- रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन इत्यादि ।

नागार्जुन को साहित्य में उनके द्धारा दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक मैथिली कविता संग्रह के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया ।

भावार्थ -

पौराणिक आख्यान है कि महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या अपने सौंदर्य के कारण इंद्र की कामवासना का शिकार होने पर अपने पति गौतम के शाप के कारण पाषाणी बन गई। शिला बनी अहिल्या राम के चरण-रज के स्पर्श से शापमुक्त हो गई । इसी पौराणिक प्रसंग को कवि नागार्जुन ने पुनः वाणी प्रदान की है ।

*****

3. मीराबाई:

मीराबाई – (जन्म: 1498 ई., मृत्यु: 1547 ई.) भगवान श्रीकृष्ण की एक महान भक्त थी जिन्हें "राजस्थान की राधा" भी कहा जाता है। मीरा एक अच्छी गायिका, कवि व संत भी थी। उसका जन्म मध्यकालीन राजपूताना (वर्तमान राजस्थान) के मेड़ता शहर के कुड़की ग्राम में हुआ था। मीरा को बचपन से ही भगवान श्री कृष्ण के प्रति मोह हो गया था। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति इसी मोह के कारण वे उनकी भक्ति में जुट गई और आजीवन भक्ति में लीन रही। आज मीराबाई को महान भक्तों में से एक गिना जाता है।

मीराबाई का जन्म 1498 ई. में मेड़ता के राठौड़ राव दूदा के पुत्र रतन सिंह के यहाँ कुड़की गांव, मेड़ता (राजस्थान) में हुआ था। मीरा के पिता रतनसिंह राठौड़ एक जागीरदार थे तथा माता वीर कुमारी थी। मीरा का पालन पोषण उसके दादा-दादी ने किया। उसकी दादी भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त थी जो ईश्वर में अत्यंत विश्वास रखती थी।

मीरा दादी माँ की कृष्ण भक्ति को देखकर प्रभावित हुई। एक दिन जब एक बारात दूल्हे सहित जा रही थी तब बालिका मीरा ने उस दूल्हे को देखकर अपनी दादी से अपने दूल्हे के बारे में पूछने लगी। तो दादी ने तुरंत ही

गिरधर गोपाल का नाम बता दिया और उसी दिन से मीरा ने गिरधर गोपाल को अपना वर मान लिया।

मीराबाई का विवाह 1516 ई. में मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज सिंह के साथ हुआ था। भोजराज उस समय मेवाड़ के युवराज थे। विवाह के एक-दो साल बाद 1518 ई. में भोजराज को दिल्ली सल्तनत के खिलाफ युद्ध में जाना पड़ा। 1521 में महाराणा सांगा व मुगल शासक बाबर के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में राणा सांगा की हार हुई जिसे खानवा के युद्ध के नाम से जाना जाता है। खानवा के युद्ध में राणा सांगा व उनके पुत्र भोजराज की मृत्यु हो गई।

*****

4. रहीम

रहीम दास जी का पूरा नाम अब्दुल रहीम खान-ए-खाना है और इनका जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहोर में हुआ था। जो लाहोर अभी पाकिस्तान में स्थित है। इनके पिता का नाम बैरम खान और माता का नाम सुल्ताना बेगम था।

रम खान एक तुर्की परिवार से थे और हुमायूँ की सेना में शामिल हो गये थे। बैरम खान अकबर किशोरावस्था में सरंक्षक के रूप में भी थे। बैरम खान ने हुमायूँ की मुगल साम्राज्य को वापस स्थापित करने में सहायता की थी।

रहीम दास जी का पूरा नाम अब्दुल रहीम खान-ए-खाना है। रहीम दास जी एक कवि के साथ-साथ अच्छे सेनापति, आश्रयदाता, दानवीर, कूटनीतिज्ञ, कलाप्रेमी, साहित्यकार और ज्योतिष भी थे।

रहीम दास जी मुगल बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम दास जी अपने हिंदी दोहों से काफी मशहूर भी थे और इन्होने कई सारी किताबें भी लिखी थी। इनके नाम पर पंजाब में एक गांव का नाम भी खानखाना रखा गया है।

*****

5. मैथिलीशरण गुप्तः

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव झाँसी जिला स्थित चिरगाँव नामक गांव में 3 अगस्त, सन् 1886 ई0 में हुआ था| इनके पिता का नाम प्रेम गुप्ता तथा माता का नाम काशीबाई गुप्ता था| काव्य-रचना की ओर छोटी अवस्था से ही इनका झुकाव था| आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इन्होंने हिन्दी काव्य की नवीन धारा को पुष्ट कर उसमें अपना विशेष स्थान बना लिए थे| इनकी कविताओ में देश भक्ति एवं राष्ट्र प्रेम की प्रमुख विशेषता होने के कारण इन्हें हिंदी-साहित्य ने 'राष्ट्रकवि' का सम्मान दिया| राष्ट्रपति ने इन्हें संसद् सदस्य मनोनीत किया| इस महान कवि की मृत्यु 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० मे हो गई|

मैथिलीशरण गुप्त की रचना-संग्रह विशाल है| इनकी विशेष ख्याति रामचरितमानस पर आधारित महाकाव्य 'साकेत' के कारण प्राप्त हुई है| 'जयद्रथ वध', 'द्वापर', 'अनघ' 'पंचवटी' 'सिद्धराज' 'भारत-भारती' 'यशोधरा' आदि गुप्तजी की अनेक प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं| 'यशोधरा' एक चम्पूकाव्य कृति है| जिसमें गुप्त जी ने महान महात्मा बद्ध के चरित्र का वर्णन किया है|

*****

6. सुमित्रानंदन पंत:

सुमित्रानंदन पंत (जन्म: 20 मई 1900; मृत्यु: 28 दिसंबर, 1977) हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं। सुमित्रानंदन पंत नये युग के प्रवर्तक के रूप में आधुनिक हिन्दी साहित्य में उदित हुए। सुमित्रानंदन पंत ऐसे साहित्यकारों में गिने जाते हैं, जिनका प्रकृति चित्रण समकालीन कवियों में सबसे बेहतरीन था। आकर्षक व्यक्तित्व के धनी सुमित्रानंदन पंत के बारे में साहित्यकार राजेन्द्र यादव कहते हैं कि 'पंत अंग्रेज़ी के रूमानी कवियों जैसी वेशभूषा में रहकर प्रकृति केन्द्रित साहित्य लिखते थे।' जन्म के महज छह घंटे के भीतर उन्होंने अपनी माँ को खो दिया। पंत लोगों से बहुत जल्द प्रभावित हो जाते थे। पंत ने महात्मा गाँधी और कार्ल मार्क्स से प्रभावित होकर उन पर रचनाएँ लिख डालीं। हिंदी साहित्य के विलियम वर्ड्सवर्थ कहे जाने वाले इस

कवि ने महानायक अमिताभ बच्चन को 'अमिताभ' नाम दिया था। पद्मभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कारों से नवाजे जा चुके पंत की रचनाओं में समाज के यथार्थ के साथ-साथ प्रकृति और मनुष्य की सत्ता के बीच टकराव भी होता था। हरिवंश राय 'बच्चन' और श्री अरविंदो के साथ उनकी ज़िंदगी के अच्छे दिन गुजरे। आधी सदी से भी अधिक लंबे उनके रचनाकाल में आधुनिक हिंदी कविता का एक पूरा युग समाया हुआ है।

*****

7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'निराला' का जन्म महिषादल स्टेट मेदनीपुर (बंगाल) में माघ शुक्ल पक्ष की एकादशी, संवत् 1953, को हुआ था। इनका अपना घर उन्नाव ज़िले के गढ़ाकोला गाँव में है। निराला जी का जन्म रविवार को हुआ था इसलिए यह सुर्जकुमार कहलाए। 11 जनवरी, 1921 ई. को पं. महावीर प्रसाद को लिखे अपने पत्र में निराला जी ने अपनी उम्र 22 वर्ष बताई है। रामनरेश त्रिपाठी ने कविता कौमुदी के लिए सन् 1926 ई. के अन्त में जन्म सम्बंधी विवरण माँगा तो निराला जी ने माघ शुक्ल 11 सम्वत 1953 (1896) अपनी जन्म तिथि लिखकर भेजी। यह विवरण निराला जी ने स्वयं लिखकर दिया था। बंगाल में बसने का परिणाम यह हुआ कि बांग्ला एक तरह से इनकी मातृभाषा हो गयी। परिवार 'निराला' के पिता का नाम पं. रामसहाय था, जो बंगाल के

महिषादल राज्य के मेदिनीपुर ज़िले में एक सरकारी नौकरी करते थे। निराला का बचपन बंगाल के इस क्षेत्र में बीता जिसका उनके मन पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है। तीन वर्ष की अवस्था में उनकी माँ की मृत्यु हो गयी और उनके पिता ने उनकी देखरेख का भार अपने ऊपर ले लिया।

*****

8. अनामिका

जन्म : 17 अगस्त 1961, मुजफ्फरपुर (बिहार), शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से अँग्रेजी साहित्य में एम.ए., पी.एचडी.। डी.लिट्। अध्यापन- अँग्रेजी विभाग, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

आधुनिक काल के हिन्दी भाषा साहित्य की प्रमुख कहानीकार और उपन्यासकार हैं। समकालीन हिन्दी कविता की चंद सर्वाधिक चर्चित कवयित्रियों में वे शामिल की जाती हैं। अंग्रेज़ी की प्राध्यापिका होने के बावजूद अनामिका ने हिन्दी कविता कोश को समृद्ध करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। प्रख्यात आलोचक डॉ॰ मैनेजर पांडेय के अनुसार "भारतीय समाज एवं जनजीवन में जो घटित हो रहा है और घटित होने की प्रक्रिया में जो कुछ गुम हो रहा है, अनामिका की कविता में उसकी प्रभावी पहचान और अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।" वहीं दिविक रमेश के कथनानुसार "अनामिका की बिंबधर्मिता

पर पकड़ तो अच्छी है ही, दृश्य बंधों को सजीव करने की उनकी भाषा भी बेहद सशक्त है।"

कविता संग्रह : गलत पते की चिट्ठी, बीजाक्षर, अनुष्टुप, समय के शहर में, खुरदुरी हथेलियाँ, दूब धान . आलोचना : पोस्ट -एलियट पोएट्री, स्त्रीत्व का मानचित्र , तिरियाचरित्रम, उत्तरकाण्ड, मन मांजने की जरुरत, पानी जो पत्थर पीता है।

उपन्यासः अवांतरकथा, पर कौन सुनेगा, दस द्वारे का पिंजरा, तिनका तिनके पास।

अनुवादः नागमंडल (गिरीश कर्नाड), रिल्के की कवितायेँ, एफ्रो- इंग्लिश पोएम्स, अटलांट के आर-पार (समकालीन अंग्रेजी कविता), कहती हैं औरतें (विश्व साहित्य की स्त्रीवादी कविताएँ उन्हें हिंदी कविता में अपने विशिष्ट योगदान के कारण राजभाषा परिषद् पुरस्कार, साहित्य सम्मान, भारतभूषण अग्रवाल एवं केदार सम्मान पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सन् 2021 में उनको उनके 'टोकरी में दिगन्त' नाामक काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

*****

9. भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च 1913 को गाँव टिगरिया, तहसील सिवनी मालवा, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ। इनके पिता पं. सीताराम मिश्र शिक्षा विभाग में अधिकारी थे तथा साहित्य प्रेमी भी थे। भवानी प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा क्रमश: सोहागपुर, होशंगाबाद, नरसिंहपुर और जबलपुर में सम्पन्न हुई। इन्होने बी.ए. की डिग्री 1935 में जबलपुर से प्राप्त की। हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी। भवानी प्रसाद मिश्र 1946 से 1950 तक महिलाश्रम, वर्धा में शिक्षक रहे। फिर उन्होंने 1952 से 1955 तक हैदराबाद में 'कल्पना' मासिक पत्रिका का सम्पादन किया. इसके बाद 1956 से 1958 तक उन्होंने आकाशवाणी में संचालन का कार्य किया। 1958 से 1972 तक मिश्रजी 'गांधी प्रतिष्ठान', 'गांधी स्मारक निधि' और 'सर्व सेवा संघ' से जुड़े रहे।

भवानी प्रसाद मिश्र ने 1930 से कविताएँ लिखने की शुरुआत की। हाईस्कूल पास करने के पहले उनकी कविताएँ 'हिन्दू पंच' नामक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी थी। 1932 में वे माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पर्क में आए और चतुर्वेदी जी आग्रहपूर्वक अपनी पत्रिका 'कर्मवीर' में मिश्र जी की कविताएं प्रकाशित करने लगे। इसके बाद उन्होंने सिनेमा के लिए संवाद भी लिखे तथा उन्होंने मद्रास के एबीएम में संवाद निर्देशन का कार्य किया। कुछ समय

पश्चात वे मुंबई आ गए यहां उन्होंने आकाशवाणी निर्माता के रूप में कार्य किया तथा इसके बाद दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र में भी काम किया। हिंदी साहित्य में अपनी कविताओं से अमूल्य योगदान देते हुए भवानी प्रसाद मिश्र की मृत्यु 20 फरवरी 1985 को हुई।

*****

10. सुभद्राकुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले के निहालपुर गाँव में एक संपन्न परिवार में हुआ था। वह जमींदार परिवार से ताल्लुक रखती थी। उनके पिता का नाम दिलीप चौहान था।

सुभद्रा कुमारी का विद्यार्थी जीवन प्रयाग में गुजरा। उनको बचपन से ही हिंदी साहित्य की कविताये ,रचनाये पढ़ने में बहुत मज़ा आता था। सुभद्रा की सबसे अच्छी दोस्त महादेवी वर्मा थी जो सुभद्रा की तरह की कविताये लिखती थी और प्रसिद्द कवयित्री थीं।

उन्होंने शुरू में इलाहाबाद के क्रॉस्थवेट गर्ल्स स्कूल में पढ़ाई की और 1919 में मिडिल-स्कूल की परीक्षा पास की। उसी वर्ष खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से शादी के बाद, वह जबलपुर चली गईं।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताये, कहानियाँ और रचनाओं को बहुत ही आसान शब्दो में लिखा था। उन्होंने वीर कविताओं के अलावा बच्चों के लिए कविताएँ भी लिखीं। उन्होंने मध्यम वर्ग के जीवन पर कुछ बड़ी कहानियाँ भी लिखीं। सुभद्रा ने अपनी लेखन में हिंदी खड़ीबोली का इस्तेमाल किया था।

15 फरवरी, 1948 को कलबोडी (सिवनी, एमपी) के पास एक कार दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। उनके नाम पर एक भारतीय तटरक्षक जहाज का नाम रखा गया है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जबलपुर नगर निगम कार्यालय के सामने सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रतिमा स्थापित की गयी है।

झाँसी की रानी की कविता हिंदी साहित्य में सबसे ज्यादा पढ़ी और गाए जाने वाली कविताओं में से एक है. झाँसी की रानी की कविता में 1857 की क्रांति में उनकी भागीदारी के बारे बताया है की कैसे उन्होंने अंग्रेजो से मुकाबला किया था।

*****